International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक चिंता का विषय

वरुण कुमार सिंह, शोधार्थी
उच्च माध्यमिक शिक्षक ,समाजशास्त्र एवं शोधार्थी
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग भोपाल।

प्रोफेसर डॉक्टर शैलजा दुबे, शोध निर्देशिका
समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग प्रमुख
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल मध्य प्रदेश

सारांश -
भारतीय संस्कृति, अपनी प्राचीन परंपराओं, गहन दर्शन, और नैतिक मूल्यों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। जो सहिष्णुता, ईमानदारी , सदभाव, समरसता, कर्तव्यनिष्ठा,न्याय,सादगी, और परोपकार जैसे गुणों पर आधारित है। हमारे महाकाव्य, जैसे कि महाभारत और रामायण, नैतिकता और धर्म की शिक्षा देते हैं। फिर भी, आधुनिक युग में, नैतिक मूल्यों का ह्रास तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। यह चिंता का विषय है, क्योंकि किसी भी समाज की प्रगति और विकास उस समाज के नैतिक मूल्यों पर आधारित होती है।

मुख्य शब्द - भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, ईमानदारी, धर्म , प्रयास आदि।

उद्देश्य -

1 **भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों का पता लगाना। विशेष कर गुना जिले के संदर्भ में।**

2 **नैतिक मूल्यों के ह्रास को कैसे रोका जाए इस विषय पर विचार करना।**

3 **नैतिक मूल्यों के ह्रास को रोकने में कौन से उपाय अधिक कारगर होंगे उन पर ध्यान देना।**

अध्ययन विधि - साक्षात्कार और अवलोकन विधि का प्रयोग किया इसमें भी सहभागी अवलोकन पर अधिक बल दिया गया।

#भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्य

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का आधार वेद, उपनिषद, पुराण, और अन्य धार्मिक ग्रंथ हैं। सत्य, अहिंसा, करुणा, क्षमा, परोपकार, और आत्मसंयम जैसे नैतिक मूल्य सदियों से भारतीय समाज के मार्गदर्शक और पथप्रदर्शक रहे हैं। परिवार, गुरु-शिष्य परंपरा, गुरुकुल और समाज की संस्थाएं इन मूल्यों के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं ।

#नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण

आधुनिक युग में नैतिक मूल्यों के ह्रास के पीछे कई कारक हैं। इनमें प्रमुख कारण हैं:

1. *पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव*: पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण के कारण भारतीय युवाओं में पारंपरिक नैतिक मूल्यों के प्रति उदासीनता बढ़ी है। भौतिकवाद और उपभोक्तावाद प्रवृति के कारण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लोग नैतिकता को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

2. *परिवार की भूमिका में कमी*: संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन और एकल परिवारों का बढ़ता प्रचलन नैतिक शिक्षा में कमी का कारण बन रहा है। बच्चों को सही और गलत का ज्ञान देने वाले बड़े बुजुर्गों की भूमिका कम होती जा रही है।

3. *शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की कमी*: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक और चरित्र निर्माण पर ध्यान कम दिया जा रहा है। शिक्षा अब केवल भौतिक सफलता प्राप्त करने का साधन बन गई है।

4. *मीडिया और इंटरनेट का प्रभाव*: टेलीविजन, फिल्मों, और सोशल मीडिया ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। इनमें से कई माध्यम नैतिक मूल्यों के विपरीत सामग्री को परोस रहे हैं, जिससे युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

5. सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार

**: समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार नैतिक मूल्यों के ह्रास का सबसे बड़ा उदाहरण है। जब समाज के नेतृत्वकर्ता ही अनैतिक आचरण करते हैं, तो आम जनता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।कहा जा सकता है कि ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया।जैसे गुना जिले में शिक्षा विभाग का टैबलेट खरीदी घोटाला।

6. *आर्थिक असमानता और प्रतिस्पर्धा*: बढ़ती आर्थिक असमानता और भौतिक संसाधनों की होड़ ने लोगों को अपने नैतिक मूल्यों से समझौता करने के लिए मजबूर किया है।वो किसी भी स्तर तक गिरने को तैयार हो जाते हैं।

नैतिक मूल्यों के ह्रास के प्रभाव**

नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण समाज में कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं:

1. *पारिवारिक विघटन*: नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण परिवारों में झगड़े और तलाक की समस्याएं बढ़ रही हैं। पारिवारिक संबंध कमजोर हो रहे हैं। जिसका गलत प्रभाव बच्चों और समाज पर भी पढ़ रहा है

2. *अपराध और हिंसक घटनाओं में वृद्धि*: नैतिक मूल्यों के ह्रास से अपराध और हिंसा में वृद्धि हो रही है। चोरी, ठगी, और सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार एवं अन्य अपराध अब सामान्य होते जा रहे हैं। यदि गुना जिले को ही ले तो सरकारी योजनाओं के दुरूपयोग की खबर से पेपर भरे रहते है। जैसे गुना नगरपालिका में नामांतरण में हुए भ्रष्टाचार की खबर।

3. भ्रष्टाचार का प्रसार**: अनैतिक आचरण के कारण भ्रष्टाचार समाज के हर स्तर पर व्याप्त हो गया है। इससे विकास और न्याय में बाधा उत्पन्न हो रही है और गरीब जनता को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

4. समाज में असंतोष**: नैतिक मूल्यों की कमी के कारण लोग स्वार्थी और असहिष्णु हो गए हैं, जिससे समाज में असंतोष और अविश्वास बढ़ा है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

5. पर्यावरणीय संकट: नैतिकता के अभाव के कारण लोग भौतिक आवश्यकता के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग कर रहे हैं, जिससे पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।इस दिशा में एक महत्वपूर्ण जागरूकता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सामने आ रही है जिसने अभी हाल ही में 2025 के महाकुंभ प्रयागराज में एक थाली एक थैला अभियान को आरंभ कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सार्थक मुहिम चलाई है और इस दिशा में गुना जिले के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक श्री नितिन अग्रवाल जी भाई साहब द्वारा महत्वपूर्ण कार्य पूरे विभाग में किया जा रहा है इसमें गुना जिले ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है। श्री नितिन जी ने बताया कि यदि व्यक्ति को आधा गिलास पानी पीना है तो वह आधा गिलास ही पानी ले जिससे आधा गिलास पानी की बचत होगी जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।**

#नैतिक मूल्यों को पुनःस्थापित करने के उपाय

भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों को पुनःस्थापित करने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। कुछ प्रभावी उपाय निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षा में नैतिक शिक्षा का समावेश: स्कूल और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, करुणा, और परोपकार के महत्व को सिखाया जाना चाहिए।**

2. *परिवार की भूमिका को सशक्त बनाना*: परिवार को बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए समय देना चाहिए। माता-पिता और बुजुर्गों को बच्चों के लिए आदर्श बनना चाहिए। बुजुर्गों की भूमिका को परिवार में बढ़ाना चाहिए।

3. मीडिया की जिम्मेदारी: मीडिया को अपनी सामग्री में नैतिकता और सकारात्मक संदेशों को बढ़ावा देना चाहिए। अनैतिक और अश्लील सामग्री को रोकने के लिए कड़े नियम लागू किए जाने चाहिए।**

4. सामाजिक जागरूकता अभियान: नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। धार्मिक और सामाजिक संगठनों को इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। वरिष्ठ समाजसेवी और प्रबुद्ध जनों को इस दिशा में आगे आने की आवश्यकता है। जैसे गुना जिले के वरिष्ठ समाजसेवी वरदान सेवा समिति के प्रमुख श्री प्रमोद भार्गव द्वारा अभी तक लगभग 250 बंधक लोगों को मुक्त करवाने के लिए प्रयास किए जा चुके है साथ ही लगभग 200 बिछड़े लोगों को उनके परिवारों से मिलाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। जो श्री भार्गव की उनकी दयालुता और नैतिक कर्तव्य निष्ठा को प्रकट करता है।**

5. साधु-संतों और धर्मगुरुओं की भूमिका: धार्मिक नेताओं को अपने प्रवचनों में नैतिकता और सदाचार पर जोर देना चाहिए। समाज को धर्म और अध्यात्म के माध्यम से नैतिक मार्ग दिखाया जा सकता है। जैसे गुना जिले में कैंट में पंचमुखी हनुमान मंदिर के संत श्री सियाराम दास जी महाराज द्वारा युवाओं को सही दिशा में मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है उनके द्वारा जातिगत असमानता और विद्वेष को दूर करने में सार्थक उदाहरण दिए जा रहे हैं।उन्होंने बताया कि तुलसीदास जी के साथ साथ रैदास जी को भी शिरोमणि की उपाधि प्राप्त हुई है।इसी प्रकार जिस अश्वमेघ यज्ञ में रामचंद्र जी और लक्ष्मण जी को स्थान प्राप्त था वहीं स्थान रामचंद्र जी के मित्र निषाद को भी प्राप्त था। इस प्रकार**

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की जन जागरूकता जातिगत बुराइयों को दूर करने में सहायक होगी।

6. राजनीतिक सुधार: नेताओं को नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। राजनीति में पारदर्शिता और ईमानदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।**

7. स्वयं का आत्मनिरीक्षण: हर व्यक्ति को अपने व्यवहार और कार्यों का आत्म परीक्षण करना चाहिए। नैतिक मूल्यों का पालन करना केवल समाज की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की भी जिम्मेदारी है।**

#निष्कर्ष**

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गंभीर समस्या है, जो समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। यह आवश्यक है कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझें और उसे बचाने के लिए भरपूर प्रयास करें। नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना से ही समाज में शांति, स्थिरता, और समृद्धि लाई जा सकती है। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा समाज बनाएं, जहां नैतिकता और सदाचार सर्वोच्च स्थान पर हों,जो हमारे समाज, राज्य, जिले, प्रदेश और राष्ट्र को वैश्विक भौगोलिक मानचित्र पर उत्कृष्ट स्थान दिला सके।

संदर्भ सूची -

1 **मध्य प्रदेश जनसंपर्क विभाग की वेबसाइट।**
2 **मध्य प्रदेश का दैनिक भास्कर का समाचार पत्र, भोपाल।**
3 **पाञ्चजन्य पत्रिका के लेख।**
4 **मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी की ज्ञान संपदा।**
5 **मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी की पुस्तक भारतीय समाज।**